



**INTERNATIONAL JOURNAL OF DEVELOPMENT IN SOCIAL
SCIENCE AND HUMANITIES**

e-ISSN:2455-5142; p-ISSN: 2455-7730

**STUDY OF CREATIVITY OF STUDENTS STUDYING AT THE HIGH
SCHOOL LEVEL OF GOVERNMENT GIRLS INTER COLLEGE IN
THE CONTEXT OF SCIENTIFIC APTITUDE OF STUDENTS**

Anita Singh

Vice Principal, Government Girls Inter College, Pilibhit

Paper Received: 18th September 2021; **Paper Accepted:** 24th November 2021;
Paper Published: 05th December 2021

How to cite the article:

Anita Singh, Study of Creativity of Students Studying at the High School Level of Government Girls Inter College in the Context of Scientific Aptitude of Students, IJDSH, July-December 2021, Vol 12, 123-131



राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता के संदर्भ में सृजनात्मकता का अध्ययन

श्रीमती अनीता सिंह

उपप्राचार्य, राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज पीलीभीत

ABSTRACT

In the present research work, the researcher studied the scientific attitude of secondary level students in the context of their learning, thinking style and creativeness, the educational implications and utility obtained as a result of the analysis and research findings have been expressed in the following points. With this research work, information will be available for the principals regarding the scientific attitude and thinking style of the students, through which they will be able to organize workshops related to creativity in their school, so that they can identify the problems related to the students' learning thinking style or creativity. As a result of which self-confidence will be awakened in the students, provide education that develops creativity to the students, include the curriculum in the textbooks to develop scientific attitude. The student family, nation and society will all be benefited by scientific attitude. The principal should keep knowledge of the scientific aptitude of the students, so that the scientific attitude of the students should be of high level, special classes should be organized so that the principal will get information about how scientific aptitude is helpful in developing the students' learning thinking style and creativity. This research work will also be beneficial for the parents, parents should motivate the children towards education and provide facilities for studies for them. From time to time, information about the educational activities of the children should also be kept, so that they will get information about the learning thinking style of the children. At the same time, let them take part in various tasks so that scientific attitude and creativity are developed in them. The conclusion of this research work will give guidance to the teachers that they will try to identify the learning thinking style of their students and while getting their teaching done, the children will learn. Knowing the style of thinking will provide the subject matter, as a result of which the level of academic achievement of the children will be high. Teachers will be inspired to give more creative work to creative children. This research work will increase the confidence of the children.

सारांश

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का उनके अधिगम चिन्तन शैली व सृजनात्मक के संदर्भ में अध्ययन जिसके प्रदत्त विश्लेषण व शोध निष्कर्ष के फलस्वरूप प्राप्त शैक्षिक निहितार्थ एवं उपादेयता निम्न बिन्दुओं में व्यक्त की गई है। इस शोध कार्य से प्रधानाध्यापकों के लिये विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति अधिराम चिन्तन शैली व सजनात्मक के सम्बंध में जानकारी उपलब्ध होगी जिसके माध्यम से वे अपने विद्यालय में सजनशीलता से संबंधित कार्यशालाओं का आयोजन कर सकेंगे जिससे वे विद्यार्थियों की अधिगम चिन्तनशैली व सजनात्मकता से सम्बंधित समस्याओं की पहचान कर सकेंगे। जिसके फलस्वरूप विद्यार्थियों में आत्मविश्वास जागृत होगा विद्यार्थियों को सृजनात्मकता विकसित करने वाली शिक्षा प्रदान करे पाठ्यपुस्तकों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति विकसित करने वाले पाठ्यक्रम को शामिल करें। वैज्ञानिक अभिवृत्ति से विद्यार्थी परिवार राष्ट्र व समाज सभी लाभान्वित होंगे। प्रधानाचार्य को छात्रों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति की जानकारी रखनी चाहिए विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति उच्च स्तर की हो इसके लिये विशिष्ट कक्षाओं का आयोजन करना चाहिये जिससे प्रधानाचार्य को यह जानकारी मिलेगी कि वैज्ञानिक अभिवृत्ति किस प्रकार विद्यार्थियों की अधिगम चिन्तनशैली व सृजनात्मकता को विकसित करने में सहायक है। यह शोध कार्य माता पिता के लिये भी लाभकारी होगा माता पिता को चाहिये कि बालकों को शिक्षा के प्रति अभिप्रेरित कर उनके लिये अध्ययन हेतु सुविधा प्रदान करें समय समय पर बालकों को शैक्षिक गतिविधियों की भी जानकारी रखनी चाहिए जिससे उन्हें बालको की अधिगम चिन्तन शैली की जानकारी प्राप्त होगी साथ ही उन्हें विभिन्न कार्यों में भाग लेने दे जिससे उनमें वैज्ञानिक अभिवृत्ति व सृजनात्मकता का विकास हो इस शोध कार्य के निष्कर्ष से अध्यापकों को यह मार्ग दर्शन मिलेगा कि वह अपने विद्यार्थियों की अधिगम चिन्तनशैली को पहचानने का प्रयास करेंगे तथा अपने अध्यापन करवाते समय बालको की अधिगम चिन्तनशैली को जानकर विषयवस्तु प्रदान करेंगे जिसके फलस्वरूप बालको की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च होगा। सृजनशील बालको को शिक्षक अधिक रचनात्मक कार्य देनेके लिये प्रेरित होंगे। इस शोध कार्य से बालको में आत्मविश्वास बढ़ेगा।

प्रस्तावना (Introduction) -

मानव सभ्यता एवं संस्कृति की पृष्ठभूमि विज्ञान के इतिहास और साहित्य में छिपी हुयी है। किसी भी देश में किसी समय की वैज्ञानिक उन्नति उस देश की सभ्यता और संस्कृति का चित्र उपस्थित कर सकती है। आज बालकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करना एवं विकास के उपयुक्त अवसर देना आवश्यक हो गया है, जिससे विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता का विकास हो। परिणाम स्वरूप बालक सुगमतापूर्वक अधिगम स्थानांतरण में सफल हो सके। प्रस्तुत शोध में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता के संदर्भ में उनकी सृजनात्मकता एवं उनके मध्य सह संबंध का अध्ययन सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया है। वैज्ञानिक अभिक्षमता परीक्षण माला एवं रचनाशक्ति परीक्षण उपकरणों के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों की सांख्यिकीय गणना से प्राप्त परिणामों के अनुसार विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं उनकी सृजनात्मकता में धनात्मक सह संबंध होता है अतः शालाओं में विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता के विकास के साथ-साथ उनकी सृजनात्मकता के विकास के लिए गतिविधियों का आयोजन, शिक्षकों का प्रशिक्षण एवं पाठ्यवस्तु में संबंधित मुद्दों को शामिल किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

विज्ञान के अध्ययन से जहाँ हमें सत्य की खोज करके अपार शांति एवं प्रसन्नता का अनुभव होता है, वहीं जीवन में नित्य प्रति आने वाली समस्याओं का समाधान करने के लिए यथेष्ट बुद्धि एवं प्रशिक्षण भी मिलता है। उच्चतर स्तर पर विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य हैं वैज्ञानिक अभिवृत्ति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और वैज्ञानिक अभिक्षमता का विकास करना जिससे बालकों में जिज्ञासा, सृजनात्मकता, वस्तुगत समस्याओं को सुलझाने और निर्णय करने की योग्यताएँ विकसित है। प्रस्तुत शोध शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। राष्ट्र की प्रगति एवं विकास के लिए बालकों में वैज्ञानिक अभिरुचि, वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता का होना अति आवश्यक है। बालकों की वैज्ञानिक अभिक्षमता की पहचान कर उसे भविष्य में कार्य निष्पादन हेतु उचित मार्गदर्शन दिया जा सकेगा। बालक स्वयं भी जान सकेगा कि अमुक क्षेत्र में वह अधिक उन्नति कर सकता है। बालक की सृजनात्मकता का परीक्षण कर, उचित अवसर प्रदान कर उसकी जिज्ञासा एवं उत्सुकता को पूर्ण कर विज्ञान, कला, साहित्य, नृत्य, कविता, चित्र, हस्तकला आदि में अधिकतम नवीनता लायी जा सकती है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं -

1. हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता का अध्ययन करना।
2. हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।
3. हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता में सह-संबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)-प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्मित की गयीं

1. हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जावेगा।
2. हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जावेगा।

3. हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की वैज्ञानिक अभिक्षमता और सृजनात्मकता में धनात्मक सह संबंध पाया जावेगा।
4. हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता और सृजनात्मकता में धनात्मक सहसंबंध पाया जावेगा।
5. हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता में धनात्मक सह-संबंध पाया जावेगा।
6. हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता और सृजनात्मकता के सह-संबंधों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जावेगा।

परिसीमन (Delimitation) - प्रस्तुत शोध का परिसीमन निम्नानुसार किया गया है -

- हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत हाई स्कूल कक्षा के विज्ञान विषय के विद्यार्थी

शोध प्रक्रिया (Research Process) -

शोध विधि (Research Method) – प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श (Sample) – अध्ययन हेतु हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज पीलीभीत के विज्ञान विषय के हाई स्कूल कक्षा के 50 छात्र एवं 50 छात्राओं का चयन प्रसंगात्मकता प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है।

उपकरण (Tools)- प्रस्तुत शोध हेतु चयनित उपकरण हैं -

1. **वैज्ञानिक अभिक्षमता परीक्षण माला** – विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता मापन हेतु डॉ. के.के. अग्रवाल (New Delhi) द्वारा निर्मित वैज्ञानिक अभिक्षमता परीक्षण।
2. **रचनाशक्ति परीक्षण/सृजनात्मकता** – डॉ. नरेन्द्र सिंह चौहान तथा डॉ. गोविन्द तिवारी द्वारा निर्मित Creative Thinking के शाब्दिक परीक्षण (हिन्दी में)

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबंध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01 "हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता में सार्थक अंतर नहीं पाया जावेगा।"

सारिणी क्रमांक – 01

वर्ग	विद्यार्थियों की संख्या N	मध्यमान(M)	मानक विचलन(SD)	df	क्रांतिक अनुपात(CR)	सार्थकता
छात्र	50	59.6	13	98	0.72	1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर नहीं
छात्रा	50	57.8	12			

सांख्यिकी गणना के आधार पर छात्र-छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता क्रांतिक अनुपात 0.72 प्राप्त हुआ। यह मान 98 df तथा 1% विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.63 से कम है। अतः परिकल्पना क्रमांक-01 की पुष्टि होती है अर्थात् छात्र-छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना क्रमांक – 02 "हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जावेगा।"

सारिणी क्रमांक -02

वर्ग	विद्यार्थियों की संख्या N	मध्यमान(M)	मानक विचलन(SD)	df	क्रांतिक अनुपात(CR)	सार्थकता
छात्र	50	69.4	18.3	98	0.59	1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर नहीं
छात्रा	50	67.2	19.0			

सांख्यिकी गणना के आधार पर छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता का क्रांतिक अनुपात 0.59 प्राप्त हुआ। यह मान 98 df तथा 1% विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.63 से कम है। अतः परिकल्पना क्रमांक -02 की पुष्टि होती है। अर्थात् छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना क्रमांक – 03 "हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की वैज्ञानिक अभिक्षमता और सृजनात्मकता में धनात्मक सहसंबंध पाया जावेगा।" उक्त परिकल्पना की पुष्टि हेतु छात्रों की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता के मध्य सहसंबंध की गणना की गई, जिसका मान 0.632 प्राप्त हुआ जो उच्च धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है। अतः उक्त परिकल्पना क्रमांक-03 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04 " हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता में धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।" उक्त परिकल्पना की पुष्टि हेतु छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता के

मध्य सहसंबंध की गणना की गई, जिसका मान 0.551 प्राप्त हुआ जो साधारण धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है। अतः उक्त परिकल्पना क्रमांक-04 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 05 " हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता में धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।" उक्त परिकल्पना की पुष्टि हेतु विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता के मध्य सहसंबंध की गणना की गई, जिसका मान 0.507 प्राप्त हुआ जो साधारण धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है। अतः उक्त परिकल्पना क्रमांक-05 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक - 06

" हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता के सहसंबंध में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 03

वर्ग	N	सहसंबंध गुणांक (r)	फिशर का Z मान	क्रांतिक अनुपात (CR)
छात्र	50	$r_1 = 0.63$	$Z_1 = 0.74$	0.6
छात्रा	50	$r_2 = 0.55$	$Z_2 = 0.62$	

सांख्यिकी गणना के आधार पर छात्र-छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता और सृजनात्मकता के सहसंबंधों का क्रांतिक मान 0.6 प्राप्त हुआ। यह मान 98 df पर 1 प्रतिशत सार्थकता के लिये आवश्यक मान 0.195 से अधिक है। अतः परिकल्पना क्रमांक - 06 अस्वीकृत की जाती है और कहा जा सकता है कि छात्र-छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता और सृजनात्मकता के मध्य सहसंबंधों में सार्थक अंतर है।

संभावित कारण – छात्र पढ़ाई को जीवकोपार्जन की दृष्टि से देखते हैं। वह अच्छे से पढ़-लिख कर भविष्य में डॉक्टर, इंजीनियर आदि व्यावसायिक क्षेत्रों में जाना चाहते हैं। छात्रायें पढ़ाई को जीवकोपार्जन की दृष्टि से कम देखती हैं साथ ही घर के वातावरण में छात्रों की अपेक्षा छात्राओं को अपनी प्रतिभा, कौशल एवं सृजनात्मकता के विकास के कम अवसर उपलब्ध होते हैं। छात्र-छात्राओं की अपेक्षा अधिक बहिर्मुखी व्यक्तित्व के होते हैं। इस कारण दोनों के सहसंबंधों के मध्य सार्थक अंतर पाया गया है।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं

1. छात्र-छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. छात्रों की वैज्ञानिक अभिक्षमता और सृजनात्मकता के मध्य उच्च धनात्मक सहसंबंध पाया गया।
4. छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता और सृजनात्मकता के मध्य सामान्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया।
5. विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता के मध्य सामान्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया है।
6. छात्र-छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता और सृजनात्मकता के मध्य सहसंबंधों में सार्थक अंतर पाया गया है।

सुझाव (Suggestions) - शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं -

1. विद्यालय में अध्ययन के अलावा अन्य गतिविधियां जो विद्यार्थी में सृजनात्मकता के विकास हेतु आवश्यक हैं उनके आयोजन को निश्चित करने हेतु ठोस नियम निर्धारित किये जायें तथा इनका सभी विद्यालयों में अनिवार्य रूप से पालन किया जावे।
2. सृजनात्मकता के विकास के लिए पाठ्यवस्तु में इससे संबंधित सामग्री समाविष्ट की जाये।
3. शिक्षकों को सृजनात्मक बालकों की शिक्षा के संदर्भ में पर्याप्त प्रशिक्षित किया जाये।

संदर्भ (Reference)

1. त्रिपाठी, सुरेन्द्र नाथ : प्रतिभा और सृजनात्मकता।
2. वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव : आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान।
3. गुप्ता, कृष्ण कुमारा (1988): सेक्स, इंटेलिजेंस और शहरी और ग्रामीण पृष्ठभूमि के संबंध में बच्चों का रचनात्मक विकास।
4. बुच, एम.बी (एड) (1979)। शिक्षा में अनुसंधान का दूसरा सर्वेक्षण, बड़ौदा, शिक्षा में उन्नत अध्ययन केंद्र, एम.एस. विश्वविद्यालय।
5. बुच, एम.बी. (सं.) (1987)। शिक्षा में अनुसंधान का तीसरा सर्वेक्षण, बड़ौदा, शिक्षा में उन्नत अध्ययन केंद्र, एम.एस. विश्वविद्यालय।
6. बुच, एमबी (एड)। (2007)। छठा अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण, वॉल्यूम I और II, नई दिल्ली एनसीईआरटी।
7. चौधरी, जी.जी. (1983)। कुछ मनो-सामाजिक सहसंबंधों के संबंध में 11+ से 13+ आयु वर्ग के विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच क्षमता की प्रवृत्तियों की जांच। पीएच.डी. शिक्षा, एसपीयू एम.बी. में बुच फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, 1983-1988।
8. क्रांपले, ए.जे. (1999)। रचनात्मकता का शिक्षा विश्वकोश। अकादमिक प्रेस, सैन डिएगो।
9. गैरेट, एच.ई., (1968)। सामान्य मनोविज्ञान, नई दिल्ली, यूरोशिया पब्लिकेशन हाउस, (IND. पुनर्मुद्रण)। गौर,

10. विजेंदर (2012) ए स्टडी ऑफ क्लासरूम मोरेल ऑफ सीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों के संबंध में उनके नियंत्रण, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और खुफिया, एक प्रकाशित थीसिस, शिक्षा विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक-1240011

REFERENCES

1. Tripathi, Surendra Nath: Pratibha aur Srijnatmakta
2. Verma, Preeti and Srivastava: Adhunik Prayogatmak Manovigyan
3. Gupta, Krishna Kumar (1988): Sex, Intelligence aur Shahri aur Grameen Prishthbhoomi ke Sambandh me Bachchon ka Rachnatmak Vikas
4. Buch, M.B. (Ed.) (1979): Shikha me Anusandhan ka Doosra Sarvekshan, Baroda, Shiksha me Unnat Adhyayn Kendra, M. S. University
5. Buch, M.B. (S.) (1987): Shikha me Anusandhan ka Teesra Sarvekshan, Baroda, Shiksha me Unnat Adhyayn Kendra, M. S. University
6. Buch, M.B. (Ed.) (2007): Chhatha Akhil Bhartiya Saikshik Sarvekshan, Volume 1 & 2, New Delhi, NCERT
7. Chaudhary G.G., (1983), Kuch Manosamajik She-Sambandon ke Sambandh me 11+ se 13+ Aayu Varg ke Vidyarthyon ki Rachnatmak Soch Kshamta ki Pravrittiyon ki Jaanch, Ph.D., SPU, Buch Forth Survey of Research in Education in M.B. -1993-1998
8. Cropley, H.E.(1999), Rachnatmakta ka Shiksha Vishwakosh, Academic Press, San Diego
9. Garette H.E. (1968), General Psychology, New Delhi, Eureshia Publication House, (IND Reprint), Gaur
10. Vijender (2012), A Study of Classroom Moral of Senior Secondary School, Samajik, Arthik Sthiti aur Khufiya, A Published Thesis, Department of Education, Maharishi Dayanand University, Rohtak